पाठ – 6

सफेद गुड़

– सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

प्रस्तुत कहानी बाल मन की उन सहज भावनाओं को व्यक्त करता है, जिसका विकास उसके घर, परिवेश और माँ के द्वारा सुनाई हुई कहानियों के जरिये हुआ हैं। माँ का यह कहना कि वे अकेले नहीं हैं, उनके साथ ईश्वर है, से आश्वस्त, विपन्नता से गुजरता हुआ वह ग्यारह वर्ष का बालक ईश्वर के एहसास के साथ जीता और ईश्वर के साथ के लिए अपनी तोतली जबान के समय से ही प्रार्थना, मंत्र पाठ में लगा रहता है। विश्वास और ईश्वर के साथ होने की यही सोच उसे सफेद गुड़ को पाने के लिए उत्साह से भर देती है, पर कहानी का अंत एक पीड़ा बोध की अनुभूति छोड़ जाता है, जब वह बालक अपनी छलछलायी आँखों से यह एहसास करता है कि "उसने ईश्वर से माँगा था, दुकानदार से नहीं। दूसरों की दया उसे नहीं चाहिए।"

दुकान पर सफेद गुड़ रखा था, दुर्लभ था। उसे देखकर बार–बार उसके मुँह में पानी आ जाता था। आते–जाते वह ललचाई नजरों से गुड़ की ओर देखता, फिर मन मसोसकर रह जाता ।

आखिरकार उसने हिम्मत की और घर जाकर माँ से कहा। माँ बैठी फटे कपड़े सिल रही थी। उसने आँख उठाकर कुछ देर दीन दृष्टि से उसकी ओर देखा, फिर ऊपर आसमान की ओर देखने लगी और बड़ी देर तक देखती रही। बोली कुछ नहीं। वह चुपचाप माँ के पास से चला गया। जब माँ के पास पैसे नहीं होते तो वह इसी तरह देखती थी। वह यह जानता था।

वह बहुत देर गुमसुम बैठा रहा, उसे अपने वे साथी याद आ रहे थे जो उसे चिढ़–चिढ़ाकर गुड़ खा रहे थे। ज्यों–ज्यों उसे उनकी याद आती, उसके भीतर गुड़ खाने की लालसा और तेज होती जाती। एकाध बार उसके मन में माँ के बटुए से पैसे चुराने का भी ख्याल आया। यह ख्याल आते ही वह अपने को धिक्कारने लगा और इस बुरे ख्याल के लिए ईश्वर से क्षमा माँगने लगा।

उसकी उम्र ग्यारह साल की थी। घर में माँ के सिवा कोई नहीं था। हालाँकि माँ कहती थी कि वे अकेले नहीं हैं, उनके साथ ईश्वर हैं। वह चूँकि माँ का कहना मानता था इसलिए उसकी यह बात भी मान लेता था। लेकिन ईश्वर के होने का उसे पता नहीं चलता था। माँ उसे तरह–तरह से ईश्वर के होने का यकीन दिलाती। जब वह बीमार होती, तकलीफ में कराहती तो ईश्वर का नाम लेती और जब अच्छी हो जाती तो ईश्वर को धन्यवाद देती। दोनों घंटों आँख बंद कर बैठते। बिना पूजा किए हुए वे खाना नहीं खाते। वह रोज सुबह–शाम अपनी छोटी–सी घंटी लेकर, पालथी मारकर संध्या करता। उसे संध्या के सारे मंत्र याद थे, उस समय से ही जब उसकी जबान तोतली थी। अब तो यह साफ बोलने लगा था।

वे एक छोटे–से कस्बे में रहते थे। माँ एक स्कूल में अध्यापिका थी। बचपन से ही वह ऐसी कहानियाँ माँ को सुनता था। जिनमें यह बताया जाता था कि ईश्वर अपने भक्तों का कितना ख्याल रखते हैं और हर बार ऐसी कहानी सुनकर वह ईश्वर का सच्चा भक्त बनने की इच्छा से भर जाता। दूसरे भी उसके पीठ ठोंकते, और कहते, 'बड़ा शरीफ लड़का है'। ईश्वर उसकी मदद करेगा। वह भी जानता कि ईश्वर उसकी मदद करेगा। लेकिन कभी इसका कोई सबूत उसे नहीं मिला था।

उस दिन जब वह सफेद गुड़ खाने के लिए बेचैन था तब उसे ईश्वर याद आया। उसने खुद को धिक्कारा, उसे माँ से पैसे माँगकर माँ को दुखी नहीं करना चाहिए था। ईश्वर किस दिन के लिए है? ईश्वर का ख्याल आते ही वह खुश हो गया। उसके अंदर एक विचित्र–सा उत्साह आ गया। क्योंकि वह जनता था कि ईश्वर सबसे अधिक ताकतवर है। वह सब जगह है और सब कुछ कर सकता है। ऐसा कुछ भी नहीं जो वह न कर सके। तो क्या वह थोड़ा–सा गुड़ नहीं दिला सकता? उसे, जो कि बचपन से ही उसकी पूजा करता आ रहा है और जिसने कभी कोई बुरा काम नहीं किया। कभी चोरी नहीं की, किसी को सताया नहीं। उसने सोचा और इस भाव से भर उठा कि ईश्वर जरूर उसे गुड़ देगा।

वह तेजी से उठा और घर के अकेले कोने में पूजा करने बैठ गया। तभी माँ ने आवाज दी, 'बेटा, पूजा से उठने के बाद बाजार से नमक ले आना।'

उसे लगा जैसे ईश्वर ने उसकी पुकार सुन ली है। वरना पूजा पर बैठते ही माँ उसे बाजार जाने को क्यों कहती। उसने ध्यान लगाकर पूजा की, फिर पैसे और झोला लेकर बाजार की ओर चल दिया।

घर से निकलते ही उसे खेत पार करने पड़ते थे, फिर गाँव की गली, जो ईंटों की बनी हुई थी, फिर बाजार की ओर चल दिया।

उस समय शाम हो गई थी। सूरज डूब रहा था। वह खेतों में चला जा रहा था, आँखें आधी बंद किए, ईश्वर पर ध्यान लगाए और संध्या के मंत्रो को बार–बार दोहराते हुए। उसे याद नहीं उसने कितनी देर में खेत पार किए, लेकिन जब वह गाँव की ईंटों की गली में आया तब सूरज डूब चुका था और अंधेरा छाने लगा था। लोग अपने–अपने घरों में थे। धुआँ उठ रहा था। चौपाए खामोश खड़े थे । नीम सर्दी के दिन थे।

उसने पूरी आँख खोलकर बाहर का कुछ भी देखने की कोशिश नहीं की। वह अपने भीतर देख रहा था जहाँ अँधेरे में एक झिलमिलाता प्रकाश था। ईश्वर का प्रकाश और उस प्रकाश के आगे वह आँखें बंद किए मंत्रपाठ कर रहा था।

अचानक उसे अजान की आवाज सुनाई दी । गाँव के सिरे पर एक छोटी–सी मस्जिद थी। उसने थोड़ी–सी आँखें खोलकर देखा। अँधेरा काफी गाढ़ा हो गया था। मस्जिद के एक कमरे बराबर दालान में लोग नमाज के लिए इकट्ठे होने लगे थे। उसके भीतर एक लहर–सी आई। उसके पैर ठिठक गए। आँखें पूरी बंद हो गईं। वह मन–ही–मन कह उठा, ईश्वर यदि तुम हो और सच्चे मन से तुम्हारी पूजा की है तो मुझे पैसे दो, यहीं, इसी वक्त।

वह वहीं गली में बैठ गया। उसने जमीन पर हाथ रखा। जमीन ठंडी थी। हाथों के नीचे कुछ चिकना–सा महसूस हुआ। उल्लास की बिजली–सी उसके शरीर में दौड़ गई। उसने आँखें खोलकर देखा। अँधेरे में उसकी हथेली में अठन्नी दमक रही थी। वह मन–ही–मन ईश्वर के चरणों में लोट गया। खुशी के समुद्र में झूलने लगा। उसने उस अठन्नी को बार–बार निहारा, चूमा, माथे से लगाया। क्योंकि वह एक अठन्नी ही नहीं था, उस गरीब पर ईश्वर की कृपा थी। उसकी सारी पूजा और सच्चाई का ईश्वर की ओर से इनाम था, ईश्वर जरूर है, उसका मन चिल्लाने लगा। भगवान मैं तुम्हारा बहुत छोटा–सा सेवक हूँ। मैं सारा जीवन तुम्हारी भक्ति करूँगा। मुझे कभी मत बिसराना। उल्टे–सीधे शब्दों में उसने मन–ही–मन कहा और बाजार की तरफ दौड़ पड़ा। अठन्नी उसने जोर से हथेली में दबा रखी थी।

जब वह दुकान पर पहुँचा तो लालटेन जल चुकी थी। पंसारी उसके सामने हाथ जोड़े बैठा था। थोड़ी देर में उसने आँख खोली और पूछा, क्या चाहिए?

उसने हथेली में चमकती अठन्नी देखी और बोला, 'आठ आने का सफेद गुड़।'

यह कहकर उसने गर्व से अठन्नी पंसारी की तरफ गद्दी पर फेंकी। पर यह गद्दी पर न गिर उसके सामने रखे धनिए के डिब्बे में गिर गई। पंसारी ने उसे डिब्बे में टटोला पर उसमें अठन्नी नहीं मिली। एक छोटा–सा खपड़ा (चिकना पत्थर) जरूर था जिसे पंसारी ने निकाल कर फेंक दिया।

उसका चेहरा एकदम से काला पड़ गया। सिर घूम गया। जैसे शरीर का खून निकल गया हो। आँखें छलछला आईं।

'कहाँ गई अठन्नी! पंसारी ने भी हैरत से कहा।

उसे लगा जैसे वह रो पड़ेगा। देखते–देखते सबसे ताकतवर ईश्वर की उसके सामने मौत हो गई थी। उसने मरे हाथों से जेब से पैसे निकाले, नमक लिया और जाने लगा।

दुकानदार ने उसे उदास देखकर कहा, 'गुड़ ले लो, पैसे फिर आ जाएँगे।

नहीं।' उसने कहा और रो पड़ा।

अच्छा पैसे मत देना। मेरी ओर से थोड़ा–सा गुड़ ले लो। दुकानदार ने प्यार से कहा और एक टुकड़ा तोड़कर उसे देने लगा। उसने मुँह फिरा लिया और चल दिया। उसने ईश्वर से माँगा था, दुकानदार से नहीं। दूसरों की दया उसे नहीं चाहिए।

लेकिन अब वह ईश्वर से कुछ नहीं माँगता।

शब्दार्थ :– **दुर्लभ**–जो कठिनता से मिल सके, जिले पाना सहज न हो, दुष्प्राप्य **गुमशुम** –चुपचाप अपने में खोया हुआ, **धिक्कारना**–तिरस्कार करना, लानत मलामत करना फटकारना **यकीन**–विश्वास, एतबार **नीम सर्दी**–हल्की **सर्दी दलान**–बरामदा, पोर्च **निहारना**–ध्यानपूर्वक देखना, टक लगाकर देखना, देखना ताकना **बिसारना**–भुला देना, स्मरण न रखना, ध्यान में न रखना **पंसारी**–किराने के व्यापारी या दुकानदार

अभ्यास

पाठ से

1. माँ के आसमान की तरफ देखने भर से बालक क्या समझ जाता था ?
2. बचपन से ही माँ बालक को कैसी कहानियाँ सुनाती थी ?
3. बालक के अंदर विचित्र सा उत्साह क्यों आ गया ?
4. अठन्नी मिलने पर बालक ने क्या किया ?
5. अठन्नी की जगह खपड़ा निकलने पर बालक पर क्या प्रभाव पड़ा ?
6. दुकानदार के प्यार से कहने पर भी बालक ने गुड़ लेने से इंकार क्यों कर दिया?
7. बालक को क्यों विश्वास था कि ईश्वर उसे जरूर गुड़ देगा ?

पाठ से आगे

1. माँ के बटुए से पैसे चुराने का ख्याल आने पर बालक स्वयं को धिक्कारता है। आप किस तरह के काम करने का ख्याल मन में आते ही स्वयं को धिक्कारते हैं? साथियों से चर्चा कर लिखिए।
2. बालक जिसे अठन्नी समझ कर गुड़ खरीदना चाह रहा था वह खपड़ा निकला

2U4YNH

दुकानदार उसकी परेशानी को समझते हुए उसे गुड़ देना चाहता है पर बालक मुफ्त में गुड़ लेने से इंकार कर देता है। आप उस स्थान पर होते तो क्या करते और क्यों? लिखिए ?

3. बालक ईश्वर से सफेद गुड़ पाने की चाहत रखता है। आप सभी को अगर मौका मिले तो ईश्वर से क्या पाना चाहेंगे? आपस में बातचीत कर अपनी भावना को व्यक्त कीजिए।

4. बालक माँ की परिस्थिति को समझते हुए उसे दुःखी नहीं करना चाहता था। जब हम किसी चीज को पाने या लेने की जिद अपने माँ–पिता से करते हैं तो क्या हम उनकी स्थिति को समझते हैं, कक्षा में चर्चा कर लिखिए।

5. राह में चलते हुए अगर आपको १०० रुपए मिल जाए तो आप क्या करना चाहेंगे? साथियों से चर्चा कर लिखिए।

भाषा से

1. पाठ का शीर्षक है। सफेद गुड़ इसी तरह से पाठ में **फटे** कपड़े, **गाढ़ा अँधेरा, चमकती** अठन्नी, **छलछलाई** आँखें, **झिलमिलाता** प्रकाश, **दीन** दृष्टि शब्दों का प्रयोग हुआ है। रेखांकित शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताने के कारण विशेषण के उदाहरण हैं। आप पाठ में इसी प्रकार से प्रयुक्त विशेषण के उदाहरणों को ढूंढ कर लिखिए।

2UDUQJ

2. सबसे ताकतवर ईश्वर, एकदम से काला पड़ना, बहुत छोटा सेवक प्रविशेषण के उदाहरण हैं, अर्थात कभी–कभी विशेषणों के भी विशेषण बोले और लिखे जाते हैं। जो शब्द विशेषण की विशेषता बताते हैं, वे प्रविशेषण कहलाते हैं। आप पाठ को पढ़ते हुए प्रविशेषण के कुछ उदहारणों को खोजिए और कुछ नए शब्द भी बनाइए।

3. निम्नलिखित अवतरण के रिक्त स्थानों को कोष्टक में दिए गए सटीक शब्दों से भरिए ताकि कहानी का वही भाव और सन्दर्भ अभिव्यक्त हो जैसा कि पाठ में उल्लिखित है ————————(अकस्मात / अचानक) उसे अजान की ——— (पुकार / आवाज) सुनाई दी । गाँव के ———(सिरे / बीच) पर एक छोटी–सी मस्जिद थी। उसने थोड़ी–सी आँखें ————————(फाड़कर / खोलकर) देखा। अँधेरा काफी———— (चढ़ा / गाढ़ा) हो गया था। मस्जिद के एक कमरे बराबर ——— (ढलान / दालान) में लोग नमाज के लिए——— (इकट्ठे / जमा) होने लगे थे। उसके भीतर एक ———(ज्वाला / लहर)–सी आई। उसके पैर ———(जम / ठिठक) गए। आँखें पूरी बंद हो गईं। वह————(चीख–चीख कर / मन–ही–मन) कह उठा, ईश्वर यदि तुम हो और सच्चे मन से तुम्हारी––(प्रार्थना / पूजा) की है तो मुझे ——— (दौलत / पैसे) दो, यहीं इसी वक्त।

योग्यता विस्तार

1. अलग–अलग धर्मों की पूजा पद्धतियों के बारे में शिक्षक तथा साथियों से चर्चा कर उनमें निहित सामानता को लिखिए।

2. गुड़ बनाने के कौन–कौन से तरीके हैं और इसका निर्माण किन चीजों से होता है? घर और समाज के बड़े–बुजुर्गों से पूछ कर लिखिए और कक्षा में चर्चा कीजिए।

2UHQS7

●●●